मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 52 अंक 10 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
अक्टूबर 2016 बहाई वर्ष : 173

विश्व न्याय मन्दिर

...जैसे–जैसे समुदाय का आकार तथा जीवन–शक्ति बनाए रखने की क्षमता बढ़ेगी, वैसे–वैसे मित्रगण समाज के जीवन में जुड़ते जायेंगे और उन पद्धतियों का लाभ उठाने की चुनौती का सामना करेंगे जो उन्होंने उन विविध समस्याओं का समाधान करने के लिये विकसित की हैं जिनका सामना उनके गाँव द्वारा किया जा रहा है।

–28 दिसम्बर, 2010

सिवाकासी में रूही पुस्तक 10 की दो इकाइयों का अध्ययन

ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट बोर्ड के तत्वाधान में अगस्त–सितम्बर महीने में रूही पुस्तक दस की पहली और दूसरी इकाई का अध्ययन सलाहकार ओमिद सियोशानसियान के सहयोग से सिवाकासी में आयोजित किया गया। पहली इकाई के अध्ययन–कार्यक्रम में चेन्नई, टी.वी. मलाई, कुरिंजीपाड़ी, पनरूटी, बेहौर, ऊटी, विरूधुनगर और सिवाकासी के 41 प्रतिभागी उपस्थित थे जबकि दूसरी इकाई के अध्ययन में केवल 36 मित्र ही उपस्थित रह सके।

अध्ययन के आरम्भ में सलाहकार ने स्पष्ट कर दिया कि पुस्तक दस की इन दो इकाइयों के अध्ययन से पाठकों को दो स्तरों पर सहयोग मिलेगा। पहला तो यह कि सेवा के पथ पर एक–दूसरे के साथ–साथ चलने से नई अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी और दूसरा यह कि इस नई अंतर्दृष्टि के आधार पर आगामी चक्र की योजना बनाने में प्राप्त अंतर्दृष्टि का प्रभाव स्पष्ट नज़र आयेगा।

पहली इकाई के अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हो गया कि सेवा के पथ पर एक–दूसरे के साथ–साथ चलने का उद्देश्य क्या है। युवा अनुप्रेरक मोनिका की कहानी ने पाठकों को अपने क्षेत्र की मोनिकाओं की पहचान करने में मदद की और यह सोचने को प्रेरित किया कि अपने क्षेत्र के ऐसे धैर्यवान और कर्तव्यनिष्ठ अनुप्रेरकों के लिये कैसी योजना बनाई जाये। जैसे–जैसे इकाई का अध्ययन बढ़ता गया वैसे–वैसे प्रतिभागियों ने अपने–अपने क्षेत्रों में उन पात्रों की तलाश शुरू कर दी जो मोनिका और रोड्रिगो की तरह उन्हें दिखते थे। साथ ही, अपने समुदाय की वर्तमान अवस्था पर भी उन्होंने विचार किया और जाति, विवाह तथा सोच के तरीकों में बदलाव लाने की ज़रूरत समझने लगे। वे यह भी समझ सके कि इन पूर्वाग्रहों को दूर करने के लिये बहाउल्लाह की शिक्षाओं को लोगों के दिलों में उतारना पड़ेगा।

पुस्तक के अभ्यासों से अपनी त्रैमासिक योजना और भी अर्थपूर्ण बनाने में मदद मिली। मसलन, वे यह निर्धारित करने के लिये प्रेरित हुये कि एक सूची बनाई जाये जिसमें गाँव अथवा क्षेत्र के सभी किशोरों का विवरण दर्ज़ किया

शेष पृष्ठ 2 पर



रूही पुस्तक–10 का अध्ययन करने वाले प्रतिभागी

बिहारशरीफ में स्थानीय उपासना मन्दिर के संदर्भ में परामर्शी बैठक सम्पन्न

महाद्वीपीय सलाहकार श्री राजन सावंत एवं स्थानीय बहाई उपासना मंदिर, बिहारशरीफ़ के निर्माणार्थ राष्ट्रीय स्तर पर गठित टॉस्क फोर्स कमेटी के सदस्य सर्वश्री हामिद मोहाज़र, उमेश अग्रवाल एवं राजेश कुमार मीणा की विशेष उपस्थिति में 17 सितम्बर, 2016 को स्थानीय मशरिकुल–अज़कार सावंत ने रिज़वान–2012 में विश्व न्याय मंदिर द्वारा सैंटियागो, चिली में महाद्वीपीय मशरिकुल–अज़कारों की श्रृंखला में अंतिम मंदिर निर्माण के साथ–साथ दो राष्ट्रीय और पाँच स्थानीय मंदिरों जिसमें बिहारशरीफ़ भी एक है, के निर्माण की घोषणा विषयक पहलू पर चर्चा की।



बिहार में आयोजित परामर्शीय बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

बिहारशरीफ़ के निर्माण को लेकर स्थानीय टेम्पल कमेटी, क्लस्टर विकास सहयोगी एवं हरगावॉं, तेतरावॉं, चोरसुआ, सिपाह, पचौड़ी, सिंगथू, पलनी तथा राजगीर स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों के साथ पंचायत भवन, हरगावॉं में एक संयुक्त परामर्शी बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें 40 प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज़ की।

क्षेत्रीय बहाई परिषद्, बिहार एवं झारखण्ड के संयोजकत्व एवं उपक्षेत्रीय विकास सहयोगी, बिहारशरीफ़ के संचालन में बैठक की शुरूआत भक्तिमय वातावरण में सुमधुर प्रार्थनाओं एवं संबद्ध विकास समिति के स्वागत संबोधन के साथ हुई, तत्पश्चात् "उपासना मंदिर का उद्देश्य : एक संकलन" विषयक प्रपत्र जिसमें मशरिकुल–अज़कार से संबंधित बहाउल्लाह के पावन लेखों से कुछ महत्वपूर्ण उद्धरण लिये गये हैं; का अध्ययन किया गया। अध्ययनोपरांत महाद्वीपीय सलाहकार श्री राजन

बैठक में इस विधा पर भी चर्चा हुई कि उक्त मंदिर निर्माण एवं बहाई जीवन के दो अनिवार्य और अविभाज्य पक्ष उपासना व सेवा को समुदाय निर्माण की प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा बनाने के लिए यह आवश्यक है कि अब स्थानीय मित्र स्वयं इस बात का स्वामित्व लें कि गहन गतिविधि के केन्द्र में स्थापित होने वाले उक्त मंदिर निर्माण के लिए सही व उपयुक्त जमीन कौन–सी होगी जहाँ प्रतिदिन सर्वसुलभ तरीके से मित्र पहुँच सकें तथा सेवा व उपासना को एकीकृत रूप में आत्मसात कर सकें, साथ ही, उसका यथोचित क्रय मूल्य आदि क्या होगा।

ज्ञातव्य हो कि बैठक में खुले सत्र के दौरान मंदिर निर्माण हेतु जमीन चिह्नित करने, चिह्नित भू–भाग के विक्रय हेतु भू–स्वामियों को रज़ामंद करने तथा उनके यथोचित मूल्य निर्धारण हेतु उपस्थित स्थानीय मित्रों ने बताया कि अनावश्यक

शेष पृष्ठ 4 पर

इस अंक में

पश्चिम बंगाल में आयोजित गतिविधियाँ

• राज्य बहाई परिषद, पश्चिम बंगाल द्वारा 27 और 28 अगस्त, 2016 को कोलकाता, पश्चिम बंगाल में बहाई कोष शिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 21 समुदायसमूहों के 163 मित्र उपस्थित हुये। इनमें दो मित्र त्रिपुरा के भी थे। इस सम्मेलन में उत्तेजना से भर देने वाली एक बात यह थी कि प्रतिभागियों का एक–तिहाई हिस्सा महिलाओं का था। इस सफल सम्मेलन के आयोजन के लिये परिषद के कोषाध्यक्ष ने काफी परिश्रम किया, व्यक्तिगत रूप से अनेक समुदायसमूहों में वह गये और लोगों को सम्मेलन में आमंत्रित किया। प्रतिभागियों ने भी सम्मेलन को आत्मनिर्भर बनाने की पूरी कोशिश की। उन्होंने बड़ी संख्या में वचन–पत्र भर कर दिये। इस सम्मेलन की एक अन्य विशेषता यह थी कि एक सत्र हुकूकुल्लाह के लिये अलग से रखा गया था। पश्चिम बंगाल के मित्रों ने एक पंथ दो काज किये – उन्होंने प्रभुधर्म के कोष में दान देने के महत्व के बारे में विस्तार से बातें कीं और ईश्वर के अधिकार के भुगतान के महत्व पर भी प्रकाश डाला। स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं ने भी कोष से सम्बन्धित जानकारी और शिक्षा का कार्यक्रम चला रखा है और समय–समय पर वे भी कोष से सम्बन्धित शिक्षा की बैठकें स्थानीय स्तर पर आयोजित करती रहती हैं।



कोलकाता में कोष शिक्षण पर आयोजित कार्यक्रम के प्रतिभागी

• कोलकता के बहाई भवन में पहली बार 'इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी और इंटरनेट सेक्युरिटी' पर एक सेमिनार का आयोजन 3 और 4 सितम्बर को किया गया। इस सेमिनार में कोई 40 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज़ की, जिनमें क्लस्टर विकास समिति के सदस्य, संयोजक, क्लस्टर सांख्यिकी पदाधिकारी, प्रशिक्षण संस्थान मंडल के सदस्य और राज्य बहाई परिषद के सदस्य शामिल थे।

सूचना के त्वरित आदान–प्रदान और संरक्षण की दृष्टि से यह सेमिनार अत्यंत महत्व का सिद्ध हुआ। जैसे–जैसे बहाई समुदाय का विकास हो रहा है वैसे–वैसे संचार के माध्यमों को, खासकर सांख्यिकी रिपोर्ट को दुरूस्त करना आवश्यक होता जा रहा है। इसी उद्देश्य से उपस्थित मित्रों ने चर्चा की और वर्तमान सुविधाओं में सुधार के सुझाव दिये।

दूसरे दिन पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेशन द्वारा एस.आर.पी. 3 (सांख्यिकी रिपोर्ट कार्यक्रम–3.0) के द्वारा यह समझाया गया कि डाटा एंट्री को कैसे सुधारा जा सकता है या फिर दो बार एंट्री हो जाने पर या फिर मूल गतिविधियों की संख्या में सुधार के लिये क्या किया जा सकता है।



इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी पर सेमिनार में भाग लेने वाले प्रतिभागी

सेमिनार के दौरान निम्नांकित बातों पर अधिक ध्यान दिया गया :

डाटा करेक्शन, डुप्लीकेट एन्ट्री डिलिट, एक्टीविटीज़ एन्ट्री, लोकैलिटी अपडेट

उपस्थित सभी मित्रों ने यह वायदा किया कि अक्टूबर के पहले सप्ताह तक सुधार कर लिये जायेंगे।

सिवाकासी में रूही पुस्तक 10 की दो इकाइयों का अध्ययन

पृष्ठ 1 का शेष

जाये, अनुप्रेरकों की कुल संख्या एकत्र की जाये और नये अनुप्रेरकों की संख्या निर्धारित की जाये, प्रत्येक ग्रुप में दस से बारह किशोर ही रखे जायें, क्षेत्र के सभी किशोरों को दिसम्बर, 2016 तक या फिर रिज़वान 2017 तक किशोर कार्यक्रम से जोड़ लिया जाये।

जहाँ तक बच्चों की कक्षाओं का सवाल है, पहली इकाई के अभ्यासों के गहन अध्ययन और समझ से बनाई गई योजना में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया गया : गाँव अथवा क्षेत्र में कुल बच्चों की संख्या, शिक्षकों की वर्तमान संख्या तथा नये शिक्षकों के प्रशिक्षण–कार्यक्रम, प्रत्येक कक्षा में दस से बारह बच्चों की प्रतिभागिता ताकि प्रत्येक बालक/बालिका पर पूरा ध्यान दिया जा सके और दिसम्बर 2016 अथवा रिज़वान 2017 तक गाँव/क्षेत्र के सभी बालक/बालिकाओं को कक्षाओं से जोड़ना।

बच्चों और किशोरों के अलावा, इस पुस्तक के अध्ययन से युवाओं पर भी अधिक ध्यान दिये जाने की ज़रूरत उभर कर सामने आई और यह आवश्यक समझा गया कि एक सूची तैयार की जाये कि फिलहाल संस्थान–प्रक्रिया से कितने युवा जुड़े हैं और दरअसल कितने युवा किसी गाँव अथवा क्षेत्र में निवास करते हैं। सूची के तैयार हो जाने पर युवा सम्मेलनों में उन्हें आमंत्रित करने में आसानी होगी और जब वे युवा सम्मेलनों में आयेंगे तो स्वाभाविक रूप से संस्थान प्रक्रिया से जुड़ेंगे। इन्हीं युवाओं में से अधिकांश अर्थपूर्ण वार्तालाप से जुडेंगे और अन्ततः प्रभुधर्म के सक्रिय मानव संसाधन सिद्ध होंगे।

पहली इकाई के अध्ययन के बाद गृह–भ्रमण से सम्बन्धित अन्तर्दृष्टि भी सम्बलित हुई।

दूसरी इकाई–'परामर्श' के अध्ययन के बाद विस्तार से यह बात समझी जा सकी कि जो परामर्श करते हैं उनमें क्या–क्या गुण होने चाहिये और उन सभी को एक नई अंतर्दृष्टि मिली, क्योंकि सभी किसी–न–किसी स्तर पर परामर्श कर ही निर्णय लेते हैं। पुस्तक के अध्ययन के बाद उन नकारात्मक तत्वों से बचने के उपाय समझ में आये जो परामर्श के दौरान अक्सर किसी न किसी रूप में हावी हो जाते हैं। परामर्श की प्रक्रिया को बहाई शिक्षाओं और सिद्धांतों के अनुकूल रखने के लिये जो अनिवार्यतायें हैं उन पर अध्ययन के दौरान विस्तार से विचार–विमर्श किया जा सका।

'जीवंत समुदायों का निर्माण' की इन दो इकाइयों के अध्ययन से जो लाभ हुये वे कुछ इस प्रकार हैं:

- बच्चों की कक्षाओं में लगभग 700 नये बच्चे रिज़वान 2017 तक शामिल किये जायेंगे।
- रिज़वान 2017 तक 735 किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रमों से जुड़ेंगे।
- कुल 429 नये युवाओं को युवा बैठकों में आमंत्रित किया जायेगा।
- 200 से अधिक युवाओं के साथ अर्थपूर्ण वार्तालाप किया जायेगा।

इसके अलावा मित्रों ने युगल जन्मोत्सव के कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की। प्रत्येक गाँव और क्षेत्र की 'कोर टीम' की घोषणा भी इस अवसर पर की गई।



मणिपुर के वाबागई क्लस्टर में 13 और 14 अगस्त, 2016 को युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमे 37 युवाओं ने भाग लिया। इन 37 युवाओं में से 13 युवा पहले से ही संस्थान प्रक्रिया से जुड़े हुए हैं। सम्मेलन में युवा सम्मेलन से संबंधित सामग्री का अध्ययन किया गया। भोजन के उपरान्त चार छोटे समूहों में रूही पुस्तक–1 आरम्भ की।

उत्तर प्रदेश में सचिवों की बैठक

क्षेत्रीय बहाई परिषद के एक निर्णय के अनुसार अब प्रत्येक चक्र में परिषद सभी स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों से मिला करेगी। इस बैठक का प्रमुख उद्देश्य आध्यात्मिक सभाओं की गतिविधियों और उपलब्धियों की ताज़ा जानकारी प्राप्त करना तथा उनकी सीखों को एक–दूसरे से साझा करना था। 19 आध्यात्मिक सभा के सचिव इस बैठक में उपस्थित हुये, उन सब ने अपने–अपने क्षेत्र के कुछ रोचक अनुभव सुनाये। इनमें कुछ इस प्रकार हैं :

- आगरा की आध्यात्मिक सभा ने पूरे क्लस्टर को चार भागों में विभक्त कर दिया है और प्रत्येक भाग के विकास तथा गतिविधियों की देखरेख करने के लिये आध्यात्मिक सभा के दो–दो सदस्यों को उत्तरदायी बनाया है। इस प्रकार आध्यात्मिक सभा को आँखों देखी रिपोर्ट लगातार मिलती रहेगी।



सचिवों की बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागीगण

- याकूबपुर के सचिव स्वयं यह सुनिश्चित करते हैं कि समुदाय के प्रत्येक सदस्य को 19 दिवसीय सहभोज सभाओं और पवित्र दिवसों के समारोहों की सूचना प्राप्त हो जाये। सभा के सदस्य स्वयं गृह–भ्रमण कार्यक्रम में हिस्सा लेते हैं तथा समय–समय पर विस्तृत समाज के लोगों से मिलते हैं। यहाँ की आध्यात्मिक सभा की योजना में 1000 पौधे लगाने का कार्यक्रम भी शामिल है।
- लखनऊ की आध्यात्मिक सभा के सचिव बैठक के लिये एजेंडा बनाते हैं और बैठक की तारीख सदस्यों को भेजते हैं। आध्यात्मिक सभा अपनी प्रत्येक बैठक की शुरूआत विश्व न्याय मंदिर के संदेश के अंश के पाठ से करती है। आध्यात्मिक सभा समुदाय से बजट साझा करती है और अनुमानित राशि के लिये त्यागपूर्वक दान देने का आग्रह करती है।
- पूर्वाजैन (सहार क्लस्टर) की आध्यात्मिक सभा ने हाल ही उन बच्चों के माता–पिता से मुलाकात की जो स्कूल नहीं जा पा रहे हैं और उन्हें अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिये प्रेरित किया। यहाँ की आध्यात्मिक सभा ने बच्चों के स्कूल में दाखिले में भी मदद की।
- बेहलोलपुर (सहार क्लस्टर) की आध्यात्मिक सभा नियमित रूप से विकास एजेंसियों से भेंट करती है और योजना के अनुरूप काम करने के लिये उन्हें मार्गदर्शन देती है। यहाँ की सभा भी अभिभावकों से मिलती है और उनके बच्चों की प्रगति का ब्यौरा देती है।
- कुरौनी (बंथरा क्लस्टर) की आध्यात्मिक सभा व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान भी करती है। एक बार एक मित्र आध्यात्मिक सभा के पास यह शिकायत लेकर आये कि उनका पड़ोसी उनके घर के दरवाज़े पर अपने जानवर बांध देता है, जिस कारण घर के लोगों को आने–जाने में मुश्किल होती है। आध्यात्मिक सभा ने इस सम्बन्ध में ग्राम प्रधान से परामर्श किया। ग्राम प्रधान ने समस्या को समझा और राय दी कि अगर दोनों व्यक्ति प्रेम से एक–दूसरे से बातचीत करें और अपने अहंकार को भूल जाये तो समस्या समाप्त हो जायेगी। आध्यात्मिक सभा ने ग्राम प्रधान के सुझाव को शिकायत करने वाले व्यक्ति को दिया। वह व्यक्ति अपने पड़ोसी के पास गया और बड़े प्रेम तथा आदर के भाव से उससे अपनी समस्या बतलाई। पड़ोसी अपने जानवर दूसरी जगह बांधने के लिये तैयार हो गया और समस्या का समाधान हो गया।
- बंथरा समुदायसमूह में बहाउल्लाह का जन्मदिवस समारोह एक स्थान पर मनाया जाता था, जिसमें चार से पाँच सौ लोग उपस्थित हुआ करते थे। पिछले साल निर्णय लिया गया कि जन्मोत्सव समारोह स्थानीय आध्यात्मिक सभा स्तर पर मनाया

शेष पृष्ठ 4 पर

समाचारचित्र



बहाई स्कूल तादौंग, सिक्किम की प्रधानाचार्या, श्रीमती रूपा देवी शर्मा, को शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 सितम्बर, 2016 को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में, भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा "राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2015" से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार एक योग्य शिक्षक के रूप में शिक्षण के क्षेत्र में निरंतर प्रयास और बहुमूल्य योगदान के सम्मान में दिया गया। वह एक परिश्रमी शिक्षक हैं और लड़कियों की शिक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। वह अपने स्कूल के कार्यक्रम की योजना और मार्गदर्शन में शामिल रहती हैं। उन्हें वर्ष 2010 में भी सीबीएसई शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।



पटना के बहाई मित्र डॉ0 दानेश को 27 अगस्त, 2016 को टाइम्स साइवर मीडिया के सौजन्य से कैंसर केयर इंडिया के प्रसिडेंट पद्मश्री डॉ0 जे. के. सिंह के द्वारा नई दिल्ली में इंटरनेशनल हेल्थ केयर पुरस्कार दिया गया। यह सम्मान पूरे भारतवर्ष से एलोपैथ, होम्योपैथ एवं आयुर्वेद के कुल 60 डॉक्टरों को प्रदान किया गया। डॉ0 दानेश को उक्त सम्मान बेस्ट ऑफ होम्योपैथिक क्लीनिक एण्ड रिसर्च सेन्टर, पटना के लिए दिया गया।



मुंबई, महाराष्ट्र की सुश्री श्रद्धा तेली और केरल के श्री प्रथेश प्रभाकरण का विवाह 19 सितम्बर, 2016 को मुंबई में बहाई विधिविधान के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिजनों के अलावा अनेक बहाई मित्रगण भी उपस्थित हुए।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 — Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
New Delhi P.S.O. — Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

हिमाचल प्रदेश में मूल गतिविधियाँ

हिमाचल प्रदेश के बीजा क्लस्टर में मूलगतिविधियाँ नियमित रूप से और बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से चल रही हैं।

हाल ही में पाथरू और कोउंटा गांवों में दो नई बच्चों की बहाई कक्षायें आरम्भ की गई हैं, जिससे कक्षाओं की संख्या बढ़कर चार हो गई है और अगले महीने एक अन्य जा रहे हैं। चार किशोर जो पिछले साल 15 वर्ष की आयु के हुए उन्होंने प्रभुधर्म में अपनी आस्था व्यक्त की और रूही पुस्तक–1 को हाल ही में पूर्ण किया और अब वे प्रत्येक रविवार पुस्तक–3 का अध्ययन कर रहे हैं।

छह युवतियों ने रूही पुस्तक–1 और 3 का अध्ययन पूर्ण



हिमाचल प्रदेश में आयोजित गतिविधियों में भाग लेने वाले बच्चे

कक्षा शुरू करने की भी योजना है।

अभी यहाँ पर 3 किशोर आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम नियमित रूप से चलाये जा रहे हैं। अगले तीन महीनों में दो अन्य समूह आरम्भ करने के प्रयास किये कर लिया और अब वे पुस्तक–5 का अध्ययन कर रही हैं। कुछ प्रतिभागी अपने गांवों में बच्चों की बहाई कक्षायें और किशोर समूह आरम्भ करने की योजना बना रहे हैं।



जम्मू–कश्मीर में राजौरी में श्रीमती होमा जमानी द्वारा अगस्त माह में रूही पुस्तक–1 के अध्ययन का संचालन किया गया, जिसमें 12 युवाओं ने भाग लिया। इन युवाओं में अधिकतर मुस्लिम पृष्ठभूमि के थे।

बिहारशरीफ में स्थानीय उपासना मन्दिर के संदर्भ में परामर्शी बैठक सम्पन्न

पृष्ठ 1 का शेष

चर्चाओं से परहेज करते हुए मौजूदा परिस्थिति में यह सर्वथा उपयुक्त एवं समीचीन होगा कि उक्त कार्य हेतु स्थानीय स्तर पर एक टॉस्क फोर्स कमेटी हो जिसमें प्रत्येक स्थानीय आध्यात्मिक सभा के एक–दो मित्रों के साथ–साथ प्रभावशाली, प्रबुद्ध एवं स्वच्छ छवि वाले कुछ स्थानीय लोग भी शामिल हों जो सर्वाधिक उपयुक्त जमीन का चयन कर संबंधित भू–स्वामियों को मंदिर निर्माण की संकल्पनाओं, अवधारणाओं एवं उद्देश्यों से अवगत कराते हुए उन्हें जमीन विक्रय करने तथा अन्यान्य अपेक्षित सहयोग प्रदान करने हेतु तैयार कर सके तथा अनुकूल परिस्थिति की दशा में अपने उच्चतर टॉस्क फोर्स कमेटी को समस्त आशय की जानकारी उपलब्ध कराये।

तत्वतः अंतोगत्वा उपस्थित महाद्वीपीय सलाहकार एवं राष्ट्रीय कार्यदल समिति के मार्गदर्शन के आलोक में यह सुनिश्चित किया गया कि बिहारशरीफ़ की सभी स्थानीय आध्यात्मिक सभा यहाँ से जाने के बाद अपने समुदाय में अपनी एक औपचारिक बैठकें आयोजित करेंगी तथा अपनी–अपनी स्थानीय आध्यात्मिक सभा से दो–तीन ऐसे व्यक्तियों को चिह्नित करेंगे जो अपने पोषक क्षेत्रान्तर्गत जमीन चिह्नित कर एवं उसके संभावित मूल्य आदि की अच्छी तरह जानकारी लेकर पुनः 15 अक्टूबर, 2016 को दिन के 10 बजे से हरगावॉ पंचायत भवन में आयोजित होने वाली क्लस्टर स्तरीय परामर्शी बैठक में समस्त संदर्भित जानकारी साझा करेंगे; इस नेकनियति, दूरदर्शिता व पवित्रता के साथ कि जमीन का मूल्य अनावश्यक व नापाक इरादों से न बढ़े। इतना ही नहीं बल्कि स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों ने उक्त तमाम कार्यों की निर्विघ्न सफलता हेतु लगातार 24 घंटे तक 'ईश्वर के अतिरिक्त कठिनाइयों को दूर करने वाला क्या कोई अन्य है'; वाली प्रार्थना का सस्वर पाठ करने का निर्णय लिया। अंत में सामूहिक प्रार्थनोपरांत बैठक की कार्यवाही समाप्त की गई।

उत्तर प्रदेश में सचिवों की बैठक

पृष्ठ 3 का शेष

जायेगा। इस प्रकार पाँच स्थानों पर समारोह का आयोजन किया गया और प्रत्येक समारोह में चार से पाँच सौ लोग उपस्थित हुये।

- एक बार पठानखेड़ा (काकोरी क्लस्टर) की आध्यात्मिक सभा ने एक युवा बैठक के लिये बजट बनाया और इसे बैठक के दौरान सभी प्रतिभागियों से साझा किया। उत्साह इतना था कि बजट से अधिक धनराशि कोष में प्राप्त हुई, जिस अतिरिक्त धनराशि का उपयोग विभिन्न गतिविधियों के संचालन के लिये किया जा सका।
- एक आध्यात्मिक सभा ने अपने गाँव के एक गरीब परिवार की मदद तब की जब उस परिवार के मुखिया की पत्नी गम्भीर रूप से बीमार पड़ी। इलाज के लिये उसके पास पैसे नहीं थे। उस व्यक्ति ने आध्यात्मिक सभा की एक बैठक में आकर सहायता की माँग की। आध्यात्मिक सभा ने धैर्यपूर्वक उसकी परेशानी सुनी और समझी और फिर उस व्यक्ति की पत्नी के इलाज के लिए धनराशि एकत्र कर उसे दी। उसकी पत्नी स्वस्थ हो आध्यात्मिक सभा के प्रति आभार प्रकट करने एक अन्य बैठक में उपस्थित हुई।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.10. 2016
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)